HIN2B07B – FABLES

Deuxième partie (2/3) : *बेताल पच्चीसी*

बेताल पच्चीसी (भूमिका)

Prologue

बेताल पच्चीसी (पहली कहानी)

Comment le prince obtint une femme grâce à son ami le fils du ministre

बेताल पच्चीसी (छठी कहानी)

Comment les têtes du frère et de l'amant furent interverties

बेताल पच्चीसी (दसवीं कहानी)

Comment Madanasenâ fit une promesse étourdie

बेताल पच्चीसी (पन्द्रहवीं कहानी)

Comment le magicien Mûladeva changeait les sexes

बेताल पच्चीसी (उन्नीसवीं कहानी)

Comment le fils du voleur possédait encore deux autres pères

बेताल पच्चीसी (चौबीसवीं कहानी)

Comment le père épousa la fille et comment le fils épousa la mère.

बेताल पच्चीसी (पच्चीसवीं कहानी)

Epilogue

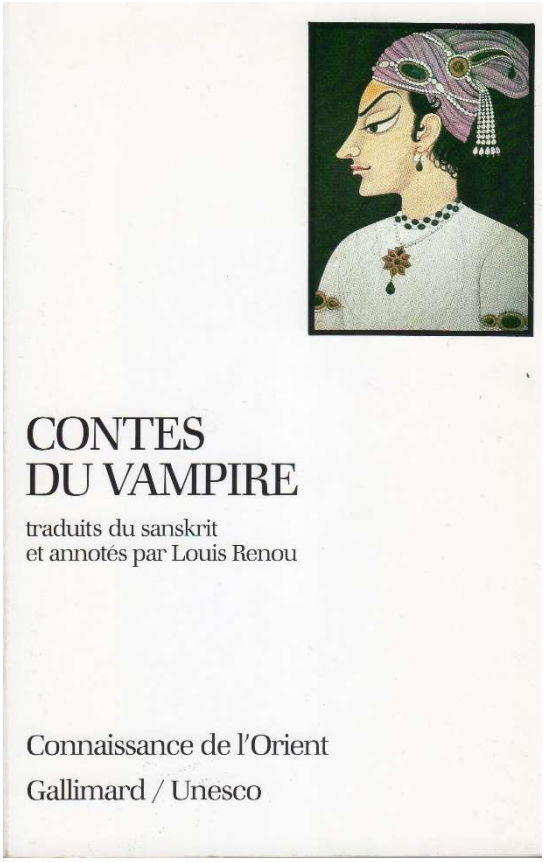

- **Contes du vampire**

  Traduits du sanskrit et annotés par Louis Renou

  Disponible à la BULAC : cotes BIULO GEN.III.10665 / BIULO GEN.III.21814 / BIULO IND.D.IV.143 / BIULO IND.D.IV.183

बेताल पच्चीसी – भूमिका

बहुत पुरानी बात है। धारा नगरी में गंधर्वसेन नाम का एक राजा राज करते थे। उसके चार रानियाँ थीं। उनके छः लड़के थे जो सब-के-सब बड़े ही चतुर और बलवान (fort, vigoureux) थे। एक दिन राजा की मृत्यु हो गई और उनकी जगह उनका बड़ा बेटा शंख गद्दी (trône) पर बैठा (accéder au, être couronné)। उसने कुछ दिन राज किया, लेकिन छोटे भाई विक्रम ने उसे मार डाला और स्वयं राजा बन बैठा। उसका राज्य दिनोंदिन (दिन-ब-दिन) बढ़ता गया और वह सारे जम्बूद्वीप का राजा बन बैठा। एक दिन उसके मन में आया कि उसे घूमकर सैर करनी चाहिए और जिन देशों के नाम उसने सुने हैं, उन्हें देखना चाहिए। सो (donc, ainsi) वह गद्दी अपने छोटे भाई भर्तृहरि को सौंपकर, योगी बन कर, राज्य से निकल पड़ा।

उस नगर में एक ब्राह्मण तपस्या (ascèse) करता था। एक दिन देवता ने प्रसन्न होकर उसे एक फल दिया और कहा कि इसे जो भी खाएगा, वह अमर (immortel) हो जाएगा। ब्रह्मण ने वह फल लाकर अपनी पत्नी को दिया और देवता की बात भी बता दी। ब्राह्मणी बोली : "हम अमर होकर क्या करेंगे ? हमेशा भीख माँगते (mendier) रहेंगे। इससे तो मरना ही अच्छा है। तुम इस फल को ले जाकर राजा को दे दो और बदले में कुछ धन ले आओ।" यह सुनकर ब्राह्मण फल लेकर राजा भर्तृहरि के पास गया और सारा हाल (situation, présent, récit) कह सुनाया। भर्तृहरि ने फल ले लिया और ब्राह्मण को एक लाख रुपये देकर विदा कर दिया।

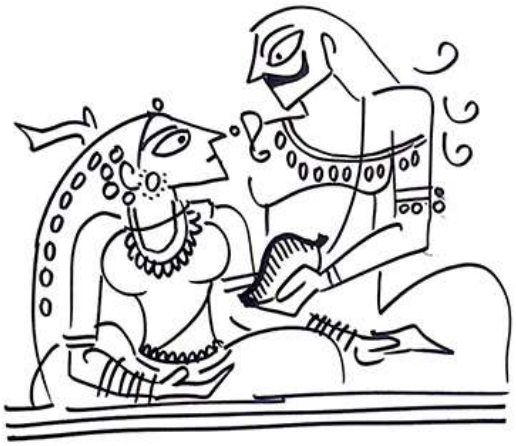

भर्तृहरि अपनी एक रानी को बहुत चाहता था। उसने महल में जाकर वह फल उसी को दे दिया। रानी की मित्रता शहर-कोतवाल (chef de la police) से थी। उसने वह फल कोतवाल को दे दिया। कोतवाल एक वेश्या (prostituée) के पास जाया करता था। वह उस फल को उस वेश्या को दे आया। वेश्या ने सोचा कि यह फल तो राजा को खाना चाहिए। वह उसे लेकर राजा भर्तृहरि के पास गई और उसे दे दिया। भर्तृहरि ने उसे बहुत-सा धन दिया लेकिन जब उसने फल को अच्छी तरह से देखा तो पहचान लिया।

उसे बड़ी चोट लगी पर उसने किसी से कुछ कहा नहीं। उसने महल में जाकर रानी से पूछा कि तुमने उस फल का क्या किया। रानी ने कहा : "मैंने उसे खा लिया।" राजा ने वह फल निकालकर दिखा दिया। रानी घबरा गयी और उसने सारी बात सच-सच कह दी। भर्तृहरि ने पता लगाया तो उसे पूरी बात ठीक-ठीक मालूम हो गयी। वह बहुत दुःखी हुआ। उसने सोचा, यह दुनिया माया-जाल (piège des illusions) है। इसमें अपना कोई नहीं (personne sur qui compter)। वह फल लेकर बाहर आया और उसे धुलवाकर स्वयं खा लिया। फिर राजपाट (règne, trône) छोड़, योगी का भेस बना (भेस / भेष बनाना prendre l'habit, l'apparence), जंगल में तपस्या करने चला गया।

भर्तृहरि के जंगल में चले जाने से विक्रम की गद्दी सूनी (vide, désert) हो गई। जब राजा इन्द्र को यह समाचार मिला तो उन्होंने एक देव को धारा नगरी की रखवाली (garde, protection) के लिए भेज दिया। वह रात-दिन वहीं रहने लगा। भर्तृहरि के राजपाट छोड़कर वन में चले जाने की बात विक्रम को मालूम हुई तो वह लौटकर अपने देश में आया। आधी रात का समय था। जब वह नगर में घुसने लगा तो देव ने उसे रोका। राजा ने कहा : "मैं विक्रम हूँ। यह मेरा राज है। तुम रोकने वाले कौन होते हो ? " देव बोला : "मुझे राजा इन्द्र ने इस नगर की चौकसी (garde, surveillance) के लिए भेजा है। तुम सच्चे राजा विक्रम हो तो आओ, पहले मुझसे लड़ो।" दोनों में लड़ाई हुई। राजा ने ज़रा-सी देर में देव को पछाड़ (chute sur le dos) दिया (jeter à terre)। तब देव बोला : " हे राजन् ! तुमने मुझे हरा दिया। मैं तुम्हें जीवन-दान (épargner, faire grâce) देता हूँ।"

इसके बाद देव ने कहा : "राजन्, एक नगर और एक नक्षत्र (étoile, constellation) में तुम तीन आदमी पैदा हुए थे । तुमने राजा के घर में जन्म लिया, दूसरे ने तेली (presseur d'huile) के और तीसरे ने कुम्हार के। तुम यहाँ का राज करते हो, तेली पाताल (monde souterrain des enfers) का राज करता था। कुम्हार ने योग साधकर (pratiquer, maîtriser) तेली को मारकर श्मशान (मशान / मसान champ de crémation) में पिशाच (démon) बना सिरस (acacia) के पेड़ से लटका दिया है। अब वह तुम्हें मारने की फिराक़ में (être après qqch, désirer) है। उससे सावधान रहना।" इतना कहकर देव चला गया और राजा महल में आ गया। राजा को वापस आया देख सबको बड़ी खुशी हुई। नगर में आनन्द मनाया गया। राजा फिर राज करने लगा।

एक दिन की बात है कि शान्तिशील नाम का एक योगी राजा के पास दरबार में आया और उसे एक फल देकर चला गया। राजा को आशंका (appréhension, crainte) हुई कि देव ने जिस आदमी को बताया था, कहीं यह वही तो नहीं है ! यह सोच उसने फल नहीं खाया, भण्डारी (trésorier, responsable de l'entrepôt) को दे दिया। योगी आता और राजा को एक फल दे जाता ।

संयोग से (par hasard, par chance) एक दिन राजा अपना अस्तबल (écurie) देखने गया था। योगी वहीं पहुँच और फल राजा के हाथ में दे दिया। राजा ने उसे उछाला (faire rebondir, jeter en l'air) तो वह हाथ से छूटकर धरती पर गिर पड़ा। उसी समय एक बन्दर ने झपटकर (se jeter sur, attraper, saisir) उसे उठा लिया और तोड़ डाला। उसमें से एक लाल (rubis) निकला, जिसकी चमक से सबकी आँखें चौंधिया (चौंधियाना [i] être ébloui, aveuglé) गईं। राजा को बड़ा अचरज (émerveillement, surprise) हुआ। उसने योगी से पूछा : "आप यह लाल मुझे रोज़ क्यों दे जाते हैं ? " योगी ने जवाब दिया : "महाराज ! राजा, गुरु, ज्योतिषी, वैद्य (médecin) और बेटी, इनके घर कभी खाली हाथ नहीं जाना चाहिए।"

राजा ने भण्डारी को बुलाकर पीछे के सब फल मँगवाए। तुड़वाने पर सबमें से एक-एक लाल निकला। इतने लाल देखकर राजा को बड़ा हर्ष (bonheur) हुआ। उसने जौहरी (bijoutier) को बुलवाकर उनका मूल्य पूछा। जौहरी बोला : "महाराज, ये लाल इतने कीमती हैं कि इनका मोल करोड़ों रुपयों में भी नहीं आँका (coter, évaluer) जा सकता। एक-एक लाल एक-एक राज्य के बराबर है।"

यह सुनकर राजा योगी का हाथ पकड़कर अकेले में ले गया। वहाँ जाकर योगी ने कहा : "महाराज, बात यह है कि गोदावरी नदी के किनारे मसान में मैं एक मंत्र सिद्ध (accomplir, réaliser) कर रहा हूँ। उसके सिद्ध हो जाने पर मेरा मनोरथ (vœux, désir) पूरा हो जाएगा। तुम एक रात मेरे पास रहोगे तो मंत्र सिद्ध हो जाएगा। एक दिन रात को हथियार बाँधकर तुम अकेले मेरे पास आ जाना।" राजा ने कहा "अच्छी बात है।" इसके उपरान्त (après, ensuite) योगी दिन और समय बताकर चला गया।

वह दिन आने पर राजा अकेला वहाँ पहुँचा। योगी ने उसे अपने पास बिठा लिया। थोड़ी देर बैठकर राजा ने पूछा : "महाराज, मेरे लिए क्या आज्ञा (ordre) है ? " योगी ने कहा : "राजन्, यहाँ से दक्षिण दिशा में दो कोस (कोस mesure env. 2 km) की दूरी पर मसान में एक सिरस के पेड़ पर एक मुर्दा (cadavre) लटका है। उसे मेरे पास ले आओ। तब तक मैं यहाँ पूजा करता हूँ।" यह सुनकर राजा वहाँ से चल दिया।

बड़ी भयंकर (effrayant) रात थी। चारों ओर अँधेरा (obscurité) फैला था। पानी बरस रहा था। भूत-प्रेत (fantômes) शोर मचा (faire du tapage) रहे थे। साँप आ-आकर पैरों में लिपटते (s'enrouler, s'accrocher) थे। लेकिन राजा हिम्मत से आगे बढ़ता गया। जब वह मसान में पहुँचा तो देखता क्या है कि शेर दहाड़ (rugir) रहे हैं, हाथी चिंघाड़ (barrir) रहे हैं, भूत-प्रेत आदमियों को मार रहे हैं। राजा बेधड़क (hardi, résolu, qui n'hésite pas) चलता गया और सिरस के पेड़ के पास पहुँच गया। पेड़ जड़ (racine) से फुनगी (extrémité, branche) तक आग से दहक (brûler) रहा था। राजा ने सोचा, हो-न-हो (quoi qu'il advienne, vraisemblablement) यह वही योगी है जिसकी बात देव ने बतायी थी। पेड़ पर रस्सी (corde) से बँधा मुर्दा लटक रहा था। राजा पेड़ पर चढ़ गया और तलवार (sabre) से रस्सी काट दी। मुर्दा नीचे गिर पड़ा और दहाड़ (hurlement) मार-मार कर रोने लगा।

राजा ने नीचे आकर पूछा : "तू कौन है ?" राजा का इतना कहना था कि वह मुर्दा खिलखिलाकर हँस (rire aux éclats) पड़ा। राजा को बड़ा अचरज हुआ। तभी वह मुर्दा फिर पेड़ पर जा लटका। राजा फिर चढ़कर ऊपर गया और रस्सी काट मुर्दे का बगल में दबा नीचे आया। बोला : "बता, तू कौन है ? " मुर्दा चुप रहा। तब राजा ने उसे एक चादर में बाँधा और योगी के पास ले चला। रास्ते में वह मुर्दा बोला : "मैं बेताल हूँ। तू कौन है और मुझे कहाँ ले जा रहा है ?" राजा ने कहा : "मेरा नाम विक्रम है। मैं धारा नगरी का राजा हूँ। मैं तुझे योगी के पास ले जा रहा हूँ।" बेताल बोला : "मैं एक शर्त (condition) पर चलूँगा। अगर तू रास्ते में बोलेगा तो मैं लौटकर पेड़ पर जा लटकूँगा।" राजा ने उसकी बात मान ली। फिर बेताल बोला : " पण्डित, चतुर और ज्ञानी (savant), इनके दिन अच्छी-अच्छी बातों में बीतते हैं, जबकि मूर्खों के दिन कलह (querelle) और नींद में। अच्छा होगा कि हमारी राह भली बातों की चर्चा (narration) में बीत जाए। मैं तुझे एक कहानी सुनाता हूँ। ले, सुन।"

बेताल पच्चीसी (पहली कहानी)

काशी में प्रतापमुकुट नाम का राजा राज्य करता था। उसके वज्रमुकुट नाम का एक बेटा था। एक दिन राजकुमार दीवान (premier ministre) के लड़के को साथ लेकर शिकार खेलने (chasser) जंगल गया। घूमते-घूमते उन्हें तालाब मिला। उसके पानी में कमल (lotus) खिले थे (s'épanouir) और हंस (cygne) किलोल कर (s'amuser, s'ébattre) रहे थे। किनारों (rives) पर घने (dense, touffu) पेड़ थे, जिन पर पक्षी चहचहा (gazouiller) रहे थे। दोनों मित्र वहाँ रुक गए और तालाब के पानी में हाथ-मुँह धोकर ऊपर महादेव के मन्दिर पर गये। घोड़ों को उन्होंने मन्दिर के बाहर बाँध दिया। वे मन्दिर में दर्शन करके बाहर आए तो देखते क्या हैं कि तालाब के किनारे राजकुमारी अपनी सहेलियों के साथ स्नान करने आई है।

दीवान का लड़का तो वहीं एक पेड़ के नीचे बैठा रहा, पर राजकुमार से न रहा गया। वह आगे बढ़ गया। राजकुमारी ने उसकी ओर देखा तो वह उस पर मोहित (charmé, attiré) हो गया। राजकुमारी भी उसकी तरफ़ देखती रही। फिर उसने किया क्या कि जूड़े (chignon) में से कमल का फूल निकाला, कान से लगाया, दाँत से कुतरा (grignoter, ronger), पैर के नीचे दबाया और फिर छाती से लगा, अपनी सखियों के साथ चली गयी।

उसके जाने पर राजकुमार निराश हो अपने मित्र के पास आया और सब हाल (situation) सुनाकर बोला : "मैं इस राजकुमारी के बिना नहीं रह सकता। पर मुझे न तो उसका नाम मालूम है, न ठिकाना। वह कैसे मिलेगी ?" दीवान के लड़के ने कहा : "राजकुमार, आप इतना घबराएँ नहीं। वह सब कुछ बता गयी है।" राजकुमार ने पूछा : "कैसे ?" वह बोला : "उसने कमल का फूल सिर से उतारकर कानों से लगाया तो उसने बताया कि मैं कर्नाटक की रहनेवाली हूँ। दाँत से कुतरा तो उसका मतलब था कि मैं दंतबाट राजा की बेटी हूँ। पाँव से दबाने का अर्थ (sens, signification) था कि मेरा नाम पद्मावती है और छाती से लगाकर उसने बताया कि तुम मेरे दिल में बस गए हो।" इतना सुनना था कि राजकुमार खुशी से फूल (fleurir, s'épanouir, gonfler) उठा। बोला, "अब मुझे कर्नाटक देश में ले चलो।"

दोनों मित्र वहाँ से चल दिए। घूमते-फिरते, सैर करते, दोनों कई दिन बाद वहाँ पहुँचे। राजा के महल के पास गए तो एक बुढ़िया (vieille femme) अपने द्वार (seuil) पर बैठी चरखा (rouet) कातती (filer) मिली। उसके पास जाकर दोनों घोड़ों से उतर पड़े और बोले : "माई, हम सौदागर (marchand) हैं। हमारा सामान पीछे आ रहा है। हमें रहने को थोड़ी जगह दे दो।" उनकी शक्ल-सूरत देखकर और बात सुनकर बुढ़िया के मन में ममता (affection maternelle) उमड़ (monter, grossir [cours d'eau], déborder / être affecté, ému) आई। बोली, "बेटा, तुम्हारा घर है। जब तक जी में आए, रहो।" दोनों वहीं ठहर गए। दीवान के बेटे ने उससे पूछा : "माई, तुम क्या करती हो ? तुम्हारे घर में कौन-कौन है ? तुम्हारी गुज़र (vie, subsistance) कैसे होती है ?" बुढ़िया ने जवाब दिया : "बेटा, मेरा एक बेटा है जो राजा की चाकरी (service) में है। मैं राजा की बेटी पद्मावती की धाय (nourrice) थी। बूढ़ी हो जाने से अब घर में रहती हूँ। राजा खाने-पीने को दे देता है। दिन में एक बार राजकुमारी को देखने महल में जाती हूँ।" राजकुमार ने बुढ़िया को कुछ धन दिया और कहा : "माई, कल तुम वहाँ जाओ तो राजकुमारी से कह देना कि जेठ ($3^{ème}$ mois de l'année mai-juin) सुदी (quinzaine claire) पंचमी (5) को तुम्हें तालाब पर जो राजकुमार मिला था, वह आ गया है।"

अगले दिन जब बुढ़िया राजमहल गई तो उसने राजकुमार का सन्देश उसे दे दिया। सुनते ही राजकुमारी ने गुस्सा होकर हाथों में चन्दन (santal) लगाकर उसके गाल पर तमाचा (gifle) मारा और कहा : "मेरे घर से निकल जा।" बुढ़िया ने घर आकर सब हाल राजकुमार को कह सुनाया। राजकुमार हक्का-बक्का (stupéfait) रह गया। तब उसके मित्र ने कहा : "राजकुमार, आप घबरायें नहीं, उसकी बातों को समझें। उसने दसों उँगलियाँ सफ़ेद चन्दन में मारीं, इससे उसका मतलब यह है कि अभी दस रोज़ चाँदनी (clair de lune) के हैं। उनके बीतने पर मैं अँधेरी रात में मिलूँगी।"

दस दिन के बाद बुढ़िया ने फिर राजकुमारी को ख़बर दी तो इस बार उसने केसर के रंग में तीन उँगलियाँ डुबोकर (plonger dans, immerger) उसके मुँह पर मारीं और कहा : "भाग यहाँ से।" बुढ़िया ने आकर सारी बात सुना दी। राजकुमार शोक (chagrin) से व्याकुल (perturbé) हो गया। दीवान के लड़के ने समझाया, "इसमें हैरान होने की क्या बात है ? उसने कहा है कि मुझे मासिक धर्म (menstruation) हो रहा है। तीन दिन और ठहरो।"

तीन दिन बीतने पर बुढ़िया फिर वहाँ पहुँची। इस बार राजकुमारी ने उसे फटकार कर (réprimander) पच्छिम की खिड़की से बाहर निकाल दिया। उसने आकर राजकुमार को बता दिया। सुनकर दीवान का लड़का बोला, "मित्र, उसने आज रात को तुम्हें उस खिड़की की राह बुलाया है।" मारे खुशी के राजकुमार उछल पड़ा (के मारे à cause de, frappé par)।

समय आने पर उसने बुढ़िया की पोशाक (vêtements, costume) पहनी, इत्र (parfum) लगाया, हथियार (armes) बाँधे। दो पहर रात बीतने पर वह महल में जा पहुँचा और खिड़की में से होकर अन्दर पहुँच गया। राजकुमारी वहाँ तैयार खड़ी थी। वह उसे भीतर ले गई। अन्दर के हाल देखकर राजकुमार की आँखें खुल गईं। एक-से-एक बढ़कर चीजें थीं। रात-भर राजकुमार राजकुमारी के साथ रहा। जैसे ही दिन निकलने को आया कि राजकुमारी ने राजकुमार को छिपा दिया और रात होने पर फिर बाहर निकाल लिया। इस तरह कई दिन बीत गए।

अचानक एक दिन राजकुमार को अपने मित्र की याद आई। उसे चिन्ता हुई कि पता नहीं उसका क्या हुआ होगा। उदास देखकर राजकुमारी ने कारण पूछा तो उसने बता दिया। बोला, "वह मेरा बड़ा प्यारा दोस्त है, बड़ा चतुर है। उसकी होशियारी ही से तो तुम मुझे मिल पाई हो।" राजकुमारी ने कहा, "मैं उसके लिए बढ़िया-बढ़िया भोजन बनवाती हूँ। तुम उसे खिलाकर, तसल्ली (consolation) देकर लौट आना।"

खाना साथ में लेकर राजकुमार अपने मित्र के पास पहुँचा। वे महीने भर से मिले नहीं थे। राजकुमार ने मिलने पर सारा हाल सुनाकर कहा कि राजकुमारी को मैंने तुम्हारी चतुराई की सारी बातें बता दी हैं, तभी तो उसने यह भोजन बनाकर भेजा है। दीवान का लड़का सोच में पड़ गया। उसने कहा, "यह तुमने अच्छा नहीं किया। राजकुमारी समझ गई कि जब तक मैं हूँ, वह तुम्हें अपने बस (contrôle, domination) में नहीं रख सकती। इसलिए उसने इस खाने में ज़हर मिलाकर भेजा है।" यह कहकर दीवान के लड़के ने थाली में से एक लड्डू उठाकर कुत्ते के आगे डाल दिया। खाते ही कुत्ता मर गया। राजकुमार को बड़ा बुरा लगा। उसने कहा, "ऐसी स्त्री से भगवान बचाये ! मैं अब उसके पास नहीं जाऊँगा।" दीवान का बेटा बोला, "नहीं, अब ऐसा उपाय (moyen)

करना चाहिए जिससे हम उसे घर ले चलें। आज रात को तुम वहाँ जाओ। जब राजकुमारी सो जाये तो उसकी बायीं (gauche) जाँघ पर त्रिशूल (trident) का निशान (empreinte, marque) बनाकर उसके गहने लेकर चले आना।"

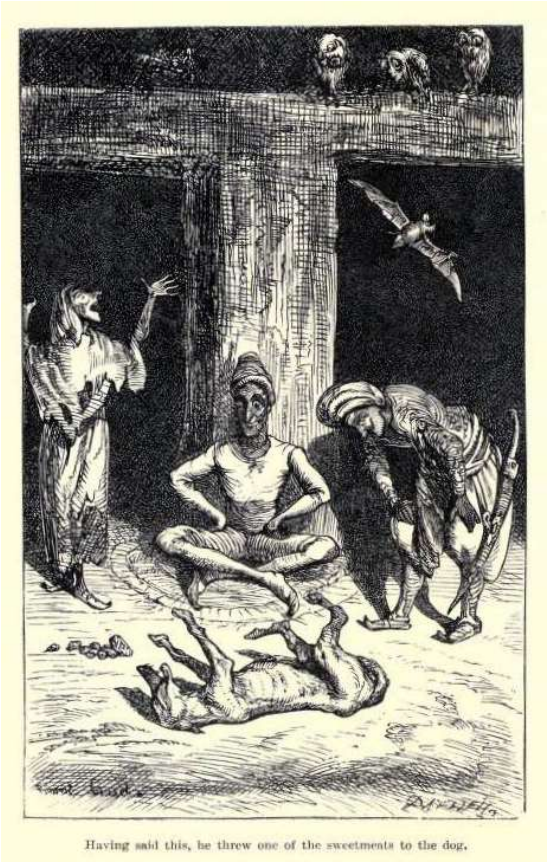
Having said this, he threw one of the sweetmeats to the dog.

राजकुमार ने ऐसा ही किया। उसके आने पर दीवान का बेटा उसे साथ ले योगी का भेस (déguisement) बना, मरघट (lieu de crémation) में जा बैठा और राजकुमार से कहा कि तुम ये गहने लेकर बाज़ार में बेच आओ। कोई पकड़े तो कह देना कि मेरे गुरु के पास चलो और उसे यहाँ ले आना। राजकुमार गहने लेकर शहर गया और महल के पास एक सुनार को उन्हें दिखाया। देखते ही सुनार ने उन्हें पहचान लिया और कोतवाल (commissaire de police) के पास ले गया। कोतवाल ने पूछा तो उसने कह दिया कि ये मेरे गुरु ने मुझे दिए हैं। गुरु को भी पकड़वा लिया गया। सब राजा के सामने पहुँचे।

राजा ने पूछा : "योगी महाराज, ये गहने आपको कहाँ से मिले ?" योगी बने दीवान के बेटे ने कहा : "महाराज, मैं स्मसान (champ de crémation) में काली चौदस को डाकिनी-मंत्र सिद्ध कर (accomplissait le rituel) रहा था कि डाकिनी (sorcière) आई। मैंने उसके गहने उतार लिए और उसकी बायीं जाँघ में त्रिशूल का निशान बना दिया।" इतना सुनकर राजा महल में गया और उसने रानी से कहा कि पद्मावती की बायीं जाँघ पर देखो कि त्रिशूल का निशान तो नहीं है। रानी देखा, तो था। राजा को बड़ा दु:ख हुआ। बाहर आकर वह योगी को एक ओर ले जाकर बोला : "महाराज, धर्मशास्त्र में खोटी (adultéré, faux, défectueux, vicieux, frauduleux) स्त्रियों के लिए क्या दण्ड (châtiment) है ?" योगी ने जवाब दिया : "राजन्, ब्राह्मण, गऊ, स्त्री, लड़का और अपने आसरे (refuge, abri, soutien) में रहनेवाले से कोई खोटा काम हो जाए तो उसे देश-निकाला दे देना चाहिए।" यह सुनकर राजा ने पद्मावती को डोली (palanquin) में बिठाकर जंगल में छुड़वा दिया। राजकुमार और दीवान का बेटा तो ताक (surveillance) में बैठे ही थे। राजकुमारी को अकेली पाकर साथ ले अपने नगर में लौट आए और आनंद से रहने लगे।

इतनी बात सुनाकर बेताल बोला : "राजन्, यह बताओ कि पाप किसको लगा है ?" राजा ने कहा : "पाप तो राजा को लगा। दीवान के बेटे ने अपने स्वामी का काम किया। कोतवाल ने राजा को कहना माना और राजकुमार ने अपना मनोरथ (désir, souhait) सिद्ध किया। राजा ने पाप किया, जो बिना विचारे उसे देश-निकाला दे दिया।"

राजा का इतना कहना था कि बेताल फिर उसी पेड़ पर जा लटका। राजा वापस गया और बेताल को लेकर चल दिया। बेताल बोला, "राजन्, सुनो, एक कहानी और सुनाता हूँ।"

बेताल पच्चीसी (दसवीं कहानी)

मदनपुर नगर में वीरवर नाम का राजा राज करता था। उसके राज्य में एक वैश्य था जिसका नाम हिरण्यदत्त था। उसके मदनसेना नाम की एक कन्या थी। एक दिन मदनसेना अपनी सखियों (amie) के साथ बाग़ में गई। वहाँ संयोग से (par hasard) सोमदत्त नामक सेठ का लड़का धर्मदत्त अपने मित्र के साथ आया हुआ था। वह मदनसेना को देखते ही उससे प्रेम करने लगा। घर लौटकर वह सारी रात उसके लिए बैचेन रहा।

अगले दिन वह फिर बाग़ में गया। मदनसेना वहाँ अकेली बैठी थी। उसके पास जाकर उसने कहा : "तुम मुझसे प्यार नहीं करोगी तो मैं प्राण दे दूँगा।" मदनसेना ने जवाब दिया : "आज से पाँचवें दिन मेरी शादी होनेवाली है। मैं तुम्हारी नहीं हो सकती।" वह बोला, "मैं तुम्हारे बिना जीवित नहीं रह सकता।" मदनसेना डर गई। बोली, "अच्छी बात है। मेरा ब्याह हो जाने दो। मैं अपने पति के पास जाने से पहले तुमसे ज़रूर मिलूँगी।"

वचन (parole, promesse) देके मदनसेना डर गई। उसका विवाह हो गया और वह जब अपने पति के पास गई तो उदास होकर बोली : "आप मुझ पर विश्वास करें और मुझे अभय दान (assurance de sécurité) दें तो एक बात कहूँ।" पति ने विश्वास दिलाया तो उसने सारी बात कह सुनायी। सुनकर पति ने सोचा कि यह बिना जाये (= गए) मानेगी तो है नहीं, रोकना बेकार है। उसने जाने की आज्ञा (permission) दे दी।

मदनसेना अच्छे-अच्छे कपड़े और गहने पहनकर चली। रास्ते में उसे एक चोर मिला। उसने उसका आँचल (pan d'un vêtement) पकड़ लिया। मदनसेना ने कहा : "तुम मुझे छोड़ दो। मेरे गहने लेना चाहते हो तो लो।" चोर बोला, "मैं तो तुम्हें चाहता हूँ।" मदनसेना ने उसे सारा हाल कहा, "पहले मैं वहाँ हो आऊँ, तब तुम्हारे पास आऊँगी।" चोर ने उसे छोड़ दिया।

मदनसेना धर्मदत्त के पास पहुँची। उसे देखकर वह बड़ा खुश हुआ और उसने पूछा : "तुम अपने पति से बचकर कैसे आई हो ?" मदनसेना ने सारी बात सच-सच कह दी। धर्मदत्त पर उसका बड़ा गहरा असर (effet) पड़ा। उसने उसे छोड़ दिया। फिर वह चोर के पास आई। चोर सब कुछ जानकर बड़ा प्रभावित (affecté, impressionné) हुआ और वह उसे घर पर छोड़ गया। इस प्रकार मदनसेना सबसे बचकर पति के पास आ गई। पति ने सारा हाल कह सुना तो बहुत प्रसन्न हुआ और उसके साथ आनन्द से रहने लगा।

इतना कहकर बेताल बोला, "हे राजा ! बताओ, पति, धर्मदत्त और चोर, इनमें से कौन अधिक त्यागी (renonçant) है ?" राजा ने कहा : "चोर। मदनसेना का पति तो उसे दूसरे आदमी पर रुझान (inclination, penchant) होने से त्याग देता है (को त्याग देना congédier, répudier)। धर्मदत्त उसे इसलिए छोड़ता है कि उसका मन बदल गया था, फिर उसे यह डर भी रहा होगा कि कहीं (pourvu que) उसका पति उसे राजा से कहकर दण्ड न दिलवा दे। लेकिन चोर का किसी को पता न था, फिर भी उसने उसे छोड़ दिया। इसलिए वह उन दोनों से अधिक त्यागी था।"

राजा का यह जवाब सुनकर बेताल फिर पेड़ पर जा लटका और राजा जब उसे लेकर चला तो उसने यह कथा सुनाई।

बेताल पच्चीसी पन्द्रहवीं कहानी

नेपाल देश में शिवपुरी नामक नगर में यशकेतु नामक राजा राज करता था। उसके चन्द्रप्रभा नाम की रानी और शशिप्रभा नाम की लड़की थी। जब राजकुमारी बड़ी हुई तो एक दिन वसंत (printemps) उत्सव (fête du printemps, Holi) देखने बाग़ में गई। वहाँ एक ब्राह्मण का लड़का आया हुआ था। दोनों ने एक-दूसरे को देखा और प्रेम करने लगे। इसी बीच एक पागल हाथी वहाँ दौड़ता हुआ आया। ब्राह्मण का लड़का राजकुमारी को उठाकर दूर ले गया और हाथी से बचा दिया। शशिप्रभा महल में चली गई पर ब्राह्मण के लड़के के लिए व्याकुल (perturbé, agité) रहने लगी।

उधर ब्राह्मण के लड़के की भी बुरी दशा (condition, état) थी। वह एक सिद्ध गुरु (सिद्ध [a] parfait, accompli / investi de pouvoirs surnaturels) के पास पहुँचा और अपनी इच्छा बताई। उसने एक योग-गुटिका (pilule pourvue de pouvoirs magiques) अपने मुँह में रखकर ब्राह्मण का रूप बना लिया और एक गुटिका ब्राह्मण के लड़के के मुँह में रखकर उसे सुन्दर लड़की बना दिया। राजा के पास जाकर कहा : "मेरा एक ही बेटा है। उसके लिए मैं इस लड़की को लाया था पर लड़का न जाने कहाँ चला गया। आप इसे यहाँ रख ले। मैं लड़के को ढूँढने जाता हूँ। मिल जाने पर इसे ले जाऊँगा।"

सिद्ध गुरु चला गया और लड़की के भेस (भेष vêtements, apparence, déguisement) में ब्राह्मण का लड़का राजकुमार के पास रहने लगा। धीरे-धीरे दोनों में बड़ा प्रेम हो गया। एक दिन राजकुमारी ने कहा : "मेरा दिल बड़ा दुखी रहता है। एक ब्राह्मण के लड़के ने पागल हाथी से मेरे प्राण (souffle de vie) बचाए थे। मेरा मन उसी में रमा (रमना être absorbé / se réjouir) है।" इतना सुनकर उसने गुटिका मुँह से निकाल ली और ब्राह्मण-कुमार बन गया। राजकुमारी उसे देखकर बहुत प्रसन्न हुई। तब से वह रात को रोज़ गुटिका निकालकर लड़का बन जाता दिन में लड़की बना रहता। दोनों ने चुपचाप विवाह कर लिया (mariage gandharva par consentement mutuel, sans cérémonie)।

कुछ दिन बाद राजा के साले की कन्या मृगांकदत्ता का विवाह दीवान के बेटे के साथ होना तय हुआ। राजकुमारी अपने कन्या रूपधार (déguisé, assumant la forme de) ब्राह्मण कुमार के साथ वहाँ गई। संयोग से (par hasard) दीवान का पुत्र उस बनावटी (artificiel, truqué) कन्या पर रीझ (être charmé, séduit) गया। विवाह होने पर वह मृगांकदत्ता को घर तो ले गया लेकिन उसका हृदय उस कन्या के लिए व्याकुल (perturbé, agité) रहने लगा। उसकी यह दशा (état) देखकर दीवान बहुत हैरान हुआ। उसने राजा को समाचार भेजा। राजा आया। उसके सामने सवाल था कि धरोहर (dépôt) के रूप में रखी हुई कन्या को वह कैसे दे दे ? दूसरी ओर यह मुश्किल कि न दे तो दीवान का लड़का मर जाए। बहुत सोच-विचार के बाद राजा ने दोनों का विवाह कर दिया।

बनावटी कन्या ने यह शर्त (condition) रखी कि चूँकि वह दूसरे के लिए लाई गई थी इसलिए उसका यह पति छ: महीने तक यात्रा करेगा, तब वह उससे बात करेगी। दीवान के लड़के ने यह शर्त मान ली। विवाह के बाद वह उसे मृगांकदत्ता के पास छोड़ तीर्थ-यात्रा (pèlerinage) चला गया। उसके जाने पर दोनों आनन्द से रहने लगे। ब्राह्मण कुमार रात में आदमी बन जाता और दिन में कन्या बना रहता। जब छ: महीने बीतने को (V-ने को imminence, alternative à V-ने वाला होना) आये तो वह एक दिन मृगांकदत्ता को लेकर भाग गया।

उधर सिद्ध गुरु एक दिन अपने मित्र शशि को युवा पुत्र बनाकर राजा के पास लाया और उस कन्या को माँगा। शाप (malédiction) के डर के मारे राजा ने कहा : "वह कन्या तो जाने कहाँ चली गई। आप मेरी कन्या से इसका विवाह कर दें।" वह राजी हो गया और राजकुमारी का विवाह शशि के साथ कर दिया। घर आने पर ब्राह्मण कुमार ने कहा, "यह राजकुमारी मेरी स्त्री है। मैंने इससे गंधर्व-रीति से विवाह किया है।" शशि ने कहा : "यह मेरी स्त्री है क्योंकि मैंने सबके सामने विधि-पूर्वक (légal, légitime) ब्याह किया है।"

बेताल ने पूछा : " शशिप्रभा दोनों में से किस की पत्नी है ?" राजा ने कहा : "मेरी राय (avis) में वह शशि की पत्नी है, क्योंकि राजा ने सबके सामने विधिपूर्वक विवाह किया था। ब्राह्मण कुमार ने तो चोरी से ब्याह किया था। चोरी की चीज़ पर चोर का अधिकार नहीं होता।"

इतना सुनना था कि बेताल गायब हो गया और राजा को जाकर फिर उसे लाना पड़ा। रास्ते में बेताल ने फिर एक कहानी सुनाई।

Questionnaire :

1 A quelle occasion la princesse Shashiprabhā est-elle sortie dans le parc et a rencontré le fils d'un Brahmane ?

---

2 De quoi le fils du Brahmane a-t-il sauvé la princesse Shashiprabhā ?

---

3 En quoi le magicien de la fable change-t-il le fils du Brahmane et en quoi se change-t-il lui-même ?

---

4 Sous quel prétexte le magicien parvient-il à confier le fils du Brahmane à la garde du roi ?

---

5 A quel moment le fils du Brahmane se révèle-t-il sous sa véritable forme à la princesse Shashiprabhā?

---

6 Sous quelle forme le fils du Brahmane vit il le jour ? La nuit ?

---

7 Qu'ont fait la princesse Shashiprabhā et le fils du Brahmane ?

---

8 De qui Mrigānkdattā est-elle la fille ?

---

9 Qu'advient-il au fils du ministre le jour de son mariage avec Mrigānkdattā ?

---

10 a) Qui le roi donne-t-il en seconde épouse au fils du ministre ?

---

b) Quel cas de conscience le roi a-t-il dû résoudre ?

---

11 Sitôt après ce nouveau mariage, pourquoi le fils du ministre part-il en pèlerinage pour six mois ?

---

12 Le fils du ministre parti, ses deux épouses se retrouvent seules ensemble. Qu'advient-il ?

---

13 Pourquoi le fils du ministre ne retrouvera-t-il pas ses épouses à son retour ?

---

14 Entre temps, le magicien retourne auprès du roi avec son vieil ami Shashi. Quelle apparence a-t-il donnée à Shashi ? Qu'est-il venu demander au roi ?

---

15 Pourquoi le roi donne-t-il sa propre fille Shashiprabhā en mariage à Shashi ?

---

16 La princesse Shashiprabhā est maintenant bigame. Pour quelle raison la princesse est-elle désignée comme l'épouse de Shashi par le roi questionné à la fin du récit ?

Textes mélangés

Les paragraphes du conte n° 6 et ceux du conte n° 19 ont été mélangés. A la suite du premier paragraphe de chacun des deux contes, reconstituez l'ordre du récit en inscrivant dans le tableau les numéros des paragraphes.

बेताल पच्चीसी छठी कहानी

धर्मपुर नाम की एक नगरी थी। उसमें धर्मशील नाम का राजा राज करता था। उसके अंधक नाम का दीवान (premier ministre) था। एक दिन दीवान ने कहा, “महाराज, एक मन्दिर बनवाकर देवी को बिठाकर पूजा की जाए तो बड़ा पुण्य (bonheur, bien / bonne action) मिलेगा।" राजा ने ऐसा ही किया। एक दिन देवी ने प्रसन्न होकर उससे वर (don) माँगने को कहा। राजा की कोई सन्तान (descendance, enfants) नहीं थी। उसने देवी से पुत्र माँगा। देवी बोली, "अच्छी बात है, तेरे बड़ा प्रतापी (vigoureux, valeureux, brillant, glorieux) पुत्र प्राप्त (obtenu) होगा।" कुछ दिन बाद राजा का एक लड़का हुआ। सारे नगर में बड़ी खुशी मनायी गयी।

बेताल पच्चीसी उन्नीसवीं कहानी

वक्रोलक नामक नगर में सूर्यप्रभ नाम का राजा राज करता था। उसके कोई सन्तान (descendance) न थी। उसी समय में एक दूसरी नगरी में धनपाल नाम का एक साहूकार (prêteur) रहता था। उसकी स्त्री का नाम हिरण्यवती था और उसके धनवती नाम की एक पुत्री थी। जब धनवती बड़ी हुई तो धनपाल मर गया और उसके नाते-रिश्तेदारों ने उसका धन ले लिया। हिरण्यवती अपनी लड़की को लेकर रात के समय नगर छोड़कर चल दी।

* * * *

01 विवाह के कुछ दिन बाद लड़की के पिता यहाँ उत्सव (fête, cérémonie) हुआ। इसमें शामिल होने के लिए न्यौता (invitation) आया। मित्र को साथ लेकर दोनों चले। रास्ते में उसी देवी का मन्दिर पड़ा तो लड़के को अपना वादा (promesse) याद आ गया। उसने मित्र और स्त्री को थोड़ी देर रुकने को कहा और स्वयं जाकर देवी को प्रणाम करके इतने ज़ोर-से तलवार (sabre) मारी कि उसका सिर धड़ (tronc) से अलग हो गया।

02 उधर बाहर खड़ी-खड़ी स्त्री हैरान हो गई तो वह मन्दिर के भीतर गई। देखकर चकित रह गई। सोचने लगी कि दुनिया कहेगी, यह बुरी औरत होगी, इसलिए दोनों को मार आई इस बदनामी (infamie, mauvaise réputation) से मर जाना अच्छा है। यह सोच उसने तलवार उठाई और जैसे ही गर्दन पर मारनी चाही कि देवी ने प्रकट (révélé) होकर उसका हाथ पकड़ लिया और कहा : "मैं तुझ पर प्रसन्न हूँ। जो चाहो, सो माँगो।" स्त्री बोली, "हे देवी ! इन दोनों को जिला (faire vivre, revivre) दो।" देवी ने कहा : "अच्छा, तुम दोनों के सिर मिलाकर रख दो।" घबराहट में स्त्री ने सिर जोड़े तो गलती से एक का सिर दूसरे के धड़ पर लग गया। देवी ने दोनों को जिला दिया। अब वे दोनों आपस में झगड़ने लगे। एक कहता था कि यह स्त्री मेरी है, दूसरा कहता मेरी।

03 इतना सुनकर बेताल फिर पेड़ पर जा लटका। राजा उसे फिर लाया तो उसने सातवीं कहानी कही।

04 उसी नगर में वसुदत्त नाम का एक गुरु था जिसके मनस्वामी नाम का शिष्य (disciple) था। वह शिष्य एक वेश्या (prostituée) से प्रेम करता था। वेश्या उससे पाँच सौ अशर्फियाँ माँगती थी। वह कहाँ से लाकर देता ! संयोग से धनवती ने मनस्वामी को देखा और वह उसे चाहने लगी। उसने अपनी दासी (servante) को उसके पास भेजा। मनस्वामी ने कहा कि मुझे पाँच सौ अशर्फियाँ मिल जाएँ तो मैं एक रात धनवती के साथ रह सकता हूँ। हिरण्यवती राज़ी (satisfait) हो गई। उसने मनस्वामी को पाँच सौ अशर्फियाँ दे दीं।

05 पिता के ऋण (dette) से उऋण (quitte) होने के लिए चन्द्रप्रभ तीर्थ (pèlerinage) करने निकला। जब वह घूमते हुए गयाकूप (lieu de pèlerinage puits près de Gâyâ) पहुँचा और पिण्डदान (offrande aux ancêtres, पिण्ड boule de farine ou de riz) किया तो उसमें से तीन हाथ एक साथ निकले। चन्द्रप्रभ ने चकित होकर ब्राह्मणों से पूछा कि किसको पिण्ड दूँ ? उन्होंने कहा : "लोहे (acier) की कील (clou) वाला चोर का हाथ है, पवित्री (tige d'herbe kusha pour filtrer le soma, insigne sacerdotal) वाला ब्राह्मण का है और अंगूठी (bague) वाला राजा का। आप तय करो कि किसको देना है ?"

06 इतना सुनकर बेताल फिर पेड़ पर जा लटका और राजा को वहाँ जाकर उसे लाना पड़ा। रास्ते में फिर उसने एक कहानी सुनाई।

07 देर हो जाने पर जब उसका मित्र मन्दिर के अन्दर गया तो देखता क्या है कि उसके मित्र का सिर धड़ से अलग पड़ा है। उसने सोचा कि यह दुनिया बड़ी बुरी है। कोई यह तो समझेगा नहीं कि इसने अपने-आप शीश (tête) चढ़ाया है। सब यही कहेंगे कि इसकी सुन्दर स्त्री को हड़पने (s'approprier, usurper) के लिए मैंने इसकी गर्दन काट दी। इससे कहीं मर जाना अच्छा है। यह सोच उसने तलवार लेकर अपनी गर्दन उड़ा दी।

08 बेताल बोला, "हे राजन् ! बताओ कि यह स्त्री किसकी हो ?" राजा ने कहा, "नदियों में गंगा उत्तम (meilleur) है, पर्वतों में सुमेरु, वृक्षों (arbre) में कल्पवृक्ष (arbre à souhaits né du barattage de l'océan de lait) और अंगों में सिर। इसलिए शरीर पर पति का सिर लगा हो, वही पति होना चाहिए।"

09 रास्ते में उसे एक चोर सूली (gibet) पर लटकता हुआ मिला। वह मरा नहीं था। उसने हिरण्यवती को देखकर अपना परिचय (présentation) दिया और कहा : "मैं तुम्हें एक हज़ार अशरफियाँ दूँगा। तुम अपनी लड़की का ब्याह मेरे साथ कर दो।" हिरण्यवती ने कहा : "तुम तो मरने वाले हो।" चोर बोला, "मेरे कोई पुत्र नहीं है और निपूते (sans enfant) की परलोक (au-delà) में सद्गति (délivrance, salut) नहीं होती। अगर मेरी आज्ञा से (selon mes instructions) और किसी से भी इसके पुत्र पैदा हो जाएगा तो मुझे सद्गति मिल जाएगी।" हिरण्यवती ने लोभ के वश (subjugation, pouvoir, contrôle) होकर उसकी बात मान ली और धनवती का ब्याह उसके साथ कर दिया। चोर बोला, "इस बड़ के पेड़ (banian) के नीचे अशर्फियाँ गड़ी (enterré) हैं। सो ले लेना और मेरे प्राण निकलने पर मेरा क्रिया-कर्म करके तुम अपनी बेटी के साथ अपने नगर में चली जाना।" इतना कहकर चोर मर गया। हिरण्यवती ने ज़मीन खोदकर अशर्फियाँ निकालीं, चोर का क्रिया-कर्म किया और अपने नगर में लौट आई।

10 बाद में धनवती के एक पुत्र उत्पन्न हुआ। उसी रात शिवाजी ने सपने में उन्हें दर्शन देकर कहा : "तुम इस बालक को हज़ार अशर्फियों के साथ राजा के महल के दरवाज़े पर रख आओ।" माँ-बेटी ने ऐसा ही किया। उधर शिवाजी ने राजा को सपने में दर्शन देकर कहा, "तुम्हारे द्वार पर किसी ने धन के साथ लड़का रख दिया है, उसे ग्रहण (prise) करो।" राजा ने अपने नौकरों को भेजकर बालक और अशर्फियों को मँगा लिया। बालक का नाम उसने चन्द्रप्रभ रखा। जब वह लड़का बड़ा हुआ तो उसे गद्दी (trône) सौंपकर (confier) राजा काशी चला गया और कुछ दिन बाद मर गया।

11 इतना कहकर बेताल बोला, "राजन्, तुम बताओ कि उसे किसको पिण्ड देना चाहिए ?" राजा ने कहा : "चोर को क्योंकि उसी का वह पुत्र था। मनस्वामी उसका पिता इसलिए नहीं हो सकता कि वह तो एक रात के लिए पैसे से ख़रीदा हुआ था। राजा भी उसका पिता नहीं हो सकता, क्योंकि उसे बालक को पालने के लिए धन मिल गया था। इसलिए चोर ही पिण्ड का अधिकारी है।"

12 एक दिन एक धोबी अपने मित्र के साथ उस नगर में आया। उसकी निगाह (regard) देवी के मन्दिर में पड़ी। उसने देवी को प्रणाम करने का इरादा किया। उसी समय उसे एक धोबी की लड़की दिखाई दी जो बड़ी सुन्दर थी। उसे देखकर वह इतना पागल हो गया कि उसने मन्दिर में जाकर देवी से प्रार्थना की : "हे देवी ! यह लड़की मुझे मिल जाए। अगर मिल गई तो मैं अपना सिर तुझ पर चढ़ा (sacrifier, offrir, dédier) दूँगा।" इसके बाद वह हर घड़ी बेचैन रहने लगा। उसके मित्र ने उसके पिता से सारा हाल कहा। अपने बेटे की यह हालत देखकर वह लड़की के पिता के पास गया और उसके अनुरोध (insistance) करने पर दोनों का विवाह हो गया।

बेताल पच्चीसी चौबीसवीं कहानी

किसी नगर में मांडलिक नाम का राजा राज करता था। उसकी पत्नी का नाम चडवती था। वह मालव देश के राजा की लड़की थी। उसके लावण्यवती नाम की एक कन्या थी। जब वह विवाह के योग्य हुई तो राजा के भाई-बन्धुओं ने उसका राज्य छीन लिया और उसे देश-निकाला दे दिया। राजा रानी और कन्या को साथ लेकर मालव देश को चल दिया। रात को वे एक वन (forêt) में ठहरे। पहले दिन चलकर भीलों की नगरी (petite ville) में पहुँचे। राजा ने रानी और बेटी से कहा कि तुम लोग वन में छिप जाओ, नहीं तो भील तुम्हें परेशान करेंगे। वे दोनों वन में चली गईं। इसके बाद भीलों ने राजा पर हमला (attaque) किया। राजा ने मुकाबला किया (s'opposer, combattre), पर अन्त में वह मारा गया। भील चले गये।

उसके जाने पर रानी और बेटी जंगल से निकलकर आईं और राजा को मरा देखकर बड़ी दु:खी हुई। वे दोनों शोक (chagrin, deuil) करती हुई एक तालाब के किनारे पहुँचीं।

उसी समय वहाँ चंडसिंह नाम का साहूकार (préteur, usurier, homme riche) अपने लड़के के साथ, घोड़े पर चढ़कर, शिकार खेलने (chasser) के लिए उधर आया। दो स्त्रियों के पैरों के निशान देखकर साहूकार अपने बेटे से बोला : "अगर ये स्त्रियाँ मिल जाएँ तो जिससे चाहो विवाह कर लेना।" लड़के ने कहा : "छोटे पैर वाली छोटी उम्र की होगी, उससे मैं विवाह कर लूँगा। आप बड़ी से कर लें।" साहूकार विवाह नहीं करना चाहता था पर बेटे के बहुत कहने पर राज़ी हो गया।

थोड़ा आगे बढ़ते ही उन्हें दोनों स्त्रियाँ दिखाई दीं। साहूकार ने पूछा, "तुम कौन हो ?"रानी ने सारा हाल कह सुनाया। साहूकार उन्हें अपने घर ले गया। संयोग से रानी के पैर छोटे थे, पुत्री के पैर बड़े। इसलिए साहूकार ने पुत्री से विवाह किया, लड़के ने रानी से हुई और इस तरह पुत्री सास बनी और माँ बेटे की बहू। उन दोनों के आगे चलकर कई सन्तानें हुईं।

इतना कहकर बेताल बोला : "राजन् ! बताइए, माँ-बेटी के जो बच्चे हुए उनका आपस में क्या रिश्ता हुआ ?" यह सवाल सुनकर राजा बड़े चक्कर में पड़ा (être entrainé dans une difficulté, la confusion)। उसने बहुत सोचा पर जवाब न सूझ (venir à l'esprit) पड़ा। इसलिए वह चुपचाप चलता रहा। बेताल यह देखकर बोला : "राजन्, कोई बात नहीं है। मैं तुम्हारे धीरज (patience, force d'âme) और पराक्रम (héroïsme, bravoure) से खुश हूँ। मैं अब इस मुर्दे से निकल जाता हूँ। तुम इसे योगी के पास ले जाओ। जब वह तुम्हें इस मुर्दे को सिर झुकाकर (incliner) प्रणाम करने को कहे तो तुम कह देना कि पहले आप करके दिखाओ। जब वह सिर झुकाकर बताए तो तुम उसका सिर काट लेना। उसका बलिदान (sacrifice) करके तुम सारी पृथ्वी के राजा बन जाओगे। सिर नहीं काटा तो वह तुम्हारी बलि (sacrifice) देकर सिद्धि (pouvoirs surnaturels) प्राप्त (obtenu) करेगा।"

इतना कहकर बेताल चला गया और राजा मुर्दे को लेकर योगी के पास आया।

बेताल पच्चीसी पच्चीसवीं कहानी

As he bent him down to salute the goddess.

योगी राजा को और मुर्दे को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। बोला, "हे राजन् ! तुमने यह कठिन काम करके मेरे साथ बड़ा उपकार (bienfait) किया है। तुम सचमुच सारे राजाओं में श्रेष्ठ हो।" इतना कहकर उसने मुर्दे को उसके कंधे से उतार लिया और उसे स्नान (bain) कराकर फूलों की मालाओं से सजाकर रख दिया। फिर मंत्र से बेताल का आवाहन (invocation) करके उसकी पूजा की। पूजा के बाद उसने राजा से कहा, "हे राजन् ! तुम शीश झुकाकर इसे प्रणाम करो।"

राजा को बेताल की बात याद आ गयी। उसने कहा : "मैं राजा हूँ, मैंने कभी किसी को सिर नहीं झुकाया। आप पहले सिर झुकाकर बता दीजिए।" योगी ने जैसे ही सिर झुकाया, राजा ने तलवार से उसका सिर काट दिया। बेताल बड़ा खुश हुआ। बोला, "राजन्, यह योगी विद्याधरों (demi-dieux pourvus de pouvoirs surnaturels et serviteurs de Shiva) का स्वामी (maître) बनना चाहता था। अब तुम बनोगे। मैंने तुम्हें बहुत हैरान (fatigué) किया है। तुम जो चाहो सो माँग लो।"

राजा ने कहा : "अगर आप मुझसे खुश हैं तो मेरी प्रार्थना है कि आपने जो चौबीस कहानियाँ सुनाईं वे, और पच्चीसवीं यह, सारे संसार में प्रसिद्ध हो जाएँ और लोग इन्हें आदर (estime, respect) से पढ़े।" बेताल ने कहा, "ऐसा ही होगा। ये कथाएँ 'बेताल-पच्चीसी' के नाम से मशहूर होंगी और जो इन्हें पढ़ेंगे उनके पाप दूर हो जायेंगे।" यह कहकर बेताल चला गया। उसके जाने के बाद शिवाजी ने प्रकट (manifesté) होकर कहा : "राजन्, तुमने अच्छा किया, जो इस दुष्ट (corrompu, vil, vicieux) साधु को मार डाला। अब तुम जल्दी ही सातों द्वीपों (les sept îles concentriques qui forment le cosmos) और पाताल (monde souterrain, enfer) सहित (avec, accompagné de) सारी पृथ्वी पर राज्य स्थापित करोगे।"

इसके बाद शिवाजी अन्तर्धान हो गए (disparaître) । काम पूरे करके राजा श्मशान से नगर में आ गया। कुछ ही दिनों में वह सारी पृथ्वी का राजा बन गया और बहुत समय तक आनन्द से राज्य करते हुए अन्त में भगवान में समा (uni à) गया।